वास्तव में देखा जाय तो श्रीभगवान् की कृपा से ही मानव समाज कार्य कर रहा है और स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लेता हुआ सुखपूर्वक जीवनयापन कर रहा है। अन्यथा, उसके लिए बना रहना असम्भव है। **रसात्मकः** शब्द सारगर्भित है; चन्द्रमा के द्वारा श्रीभगवान् सब खाने योग्य पदार्थों में रस, अर्थात् स्वाद का संचार करते हैं।

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।१४।।

अहम्=मैं; **वैश्वानरः**=वैश्वानर अग्नि रूप; **भूत्वा**=होकर; **प्राणिनाम्**=प्राणियों के; **देहम्**=देह में; **आश्रितः**=स्थित; **प्राण**=शरीर से बाहर जाने वाली वायु; **अपान**=शरीर के भीतर आने वाली वायु; **समायुक्तः**=समान रूप से; **पचामि**=पचाता हूँ; **अन्नम्**=अन्न को; **चतुर्विधम्**=चार प्रकार के।

अनुवाद

मैं ही सब प्राणियों के शरीर में वैश्वानर अग्निरूप से प्राण-अपान के साथ चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ।।१४।।

तात्पर्य

आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार उदर में एक अग्नि रहती है, जो सब प्रकार के उदरगत भोजन को पचाती है। जब यह अग्नि मंद पड़ जाती है तो भूख नहीं लगती, इसके उद्दीप्त होने पर ही भूख का अनुभव होता है। कभी-कभी मन्दाग्नि का उपचार करना पड़ता है। यह अग्नि भी श्रीभगवान् का रूप है। वैदिक मन्त्रों से प्रमाणित है कि परमेश्वर अथवा ब्रह्म अग्निरूप से उदर में स्थित है और सब प्रकार के अन्न को पचाता है। अतएव श्रीभगवान् की सहायता के बिना जीव भोजन करने में भी स्वतन्त्र नहीं है। जब तक वे पाचन में सहयोग न दें, तब तक वह भोजन ही नहीं कर सकता। श्रीभगवान् अन्न को उत्पन्न ही नहीं करते, पचाते भी वही हैं; उन्हीं की कृपा से हम जीवन में आनन्द ले रहे हैं। 'वेदान्तसूत्र' में प्रमाण है: **शब्दादिभ्योऽन्तः प्रतिष्ठानाच्च**, श्रीभगवान् शब्द में हैं, देह में हैं, वायु में हैं और पाचन-शक्ति के रूप में उदर में भी हैं। अन्न—भक्ष्य, भोज्य, चोष्य और लेह्य—ये चार प्रकार का होता है। श्रीभगवान् इन सबके लिए पाचन-शक्ति हैं।

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्।।१५।।

सर्वस्य=सब प्राणियों के; **च**=तथा; **अहम्**=मैं; **हृदि**=हृदय में; **सन्निविष्टः**=स्थित हूँ; **मत्तः**=मुझसे; **स्मृतिः**=स्मरण-शक्ति; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **अपोहनम्**=विस्मृति; **च**=भी; **वेदैः**=वेदों से; **च**=तथा; **सर्वैः**=सब; **अहम्**=मैं; **एव**=ही; **वेद्यः**=जानने योग्य हूँ; **वेदान्तकृत्**=वेदान्त का रचयिता; **वेदवित्**=वेदों को जानने वाला; **एव**=निस्सन्देह; **च**=भी; **अहम्**=मैं ही हूँ।